अध्याय-सातवाँ

उपसंहार

// अ ध्या य - सा त वाँ //

-: उपसंहार :-

१) प्रथमाध्याय में डॉ॰ रांगेय राघव का व्यक्तिगत परिचय देने का प्रयास किया गया है। व्यक्तिगत परिचयमें वंश परम्परा और परिवार, जन्मतिथी, स्थान और नाम, पारिवारिक संस्कार, शिक्षा और कार्य, उनके व्यक्तित्व की सूजना आदि को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस प्रकार पाठक डॉ॰ रांगेय राघव के व्यक्तिगत परिचय को सहज ही पहचान सकते है।

२) दूसरे अध्याय में डॉ॰ रांगेय राघव का साहित्यगत परिचय लघु - प्रबन्ध की योजना के अनुसार ~~xxxxx~~ दिया गया है। प्रस्तुत लघु - प्रबन्ध से सम्बन्धित रचनाएँ - उपन्यास, कहानी तथा अन्य रचनाओं का विवरण और उनके साथ साथ प्रेरक तत्व भी है। यहाँ पर इतना ही कहना है कि, मुद्दों का विभाजन अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखकर किया गया है। अर्थात प्राप्त जानकारी के आधार पर डॉ॰ रांगेय राघव की मूल सूची और प्रकाशन विवरण भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

३) तीसरा अध्याय डॉ॰ रांगेय राघव को कहानी-साहित्य से सम्बान्धित है। इसमें डॉ॰ रांगेय राघव को कहानी- साहित्य का विवरण प्रस्तुत किया गया है। लेखक का प्रिय कहानी- लेखन के सम्बन्ध में दृष्टिकोण स्पष्ट करने का भी प्रयास किया गया है। प्रिय कहानियों के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण किया गया है। यह वर्गीकरण तीन भागों में है - सामाजिक कहानियाँ, ऐतिहासिक कहानियाँ, मनोवैज्ञानिक कहानियाँ। उपरोक्त कहानियों का क्रमश : विवेचन किया गया है। सामाजिक कहानियों में समाज की सामाजिक दशा की झाँकि

दिखाने का प्रयास किया गया है। इसी तरह मनोवैज्ञानिक कहानियों का भी विवेचन किया गया है, जो व्यक्ति और समाज के आधार पर है। इसमें प्रिय कहानियों के शीर्षकों की मीमांसा की गई है। अन्त में निष्कर्ष पेश किया गया है।

डॉ. रांगेय राधव के प्रिय कहानी - साहित्य में सामाजिक साहित्यिक प्रवृत्तियों का महत्व का स्थान मिला है। उसमें अपने समय की नवीनताएँ भी है और सुनिश्चित दृष्टिकोण भी।

४) चौथे अध्याय में रांगेय राधव की प्रिय कहानियों के भावपक्ष को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसमें विषय - वस्तू तथा प्रिय कहानी- साहित्य में भावो के द्वंद्वो को प्रस्तुत किया गया है। उसमें घटित घटनाओं के कुछ नमूने दिये गए है। वे घटनाएँ सामाजिक पक्ष, पारिवारिक पक्ष धार्मिक पक्ष, मनोवैज्ञानिक पक्ष के साथ संम्बन्ध रखती है। इसमें लेखक की प्रिय कृति की भावानुभूति और रसात्मकता के भी दर्शन कराये गये है। जैसे - शृंगार रस, करुण रस, हास्य रस, वीर रस, आदि। इन रसों का विवेचन भी किया गया है। अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

५) पाँचवाँ अध्याय रांगेय राधव की प्रिय कहानियो के कलापक्ष से सम्बन्धित है। प्रिय कहानीकार रांगेय राधव का हिन्दी साहित्य में विशीष्ट स्थान है। लेखक के कलापक्ष का बोध लघु-प्रबन्ध की योजनानुकूल किया गया है। इसमें कथानक, संवाद, पात्र - चित्रण वातावरण चित्रण, शीर्षक, भाषा - शैली, उद्देश्यआदि का सुन्दर परिचय कराया गया है। इसमें प्रत्येक प्रिय कहानियों के उदाहरण भी दिये गये हैं।

रांगेय राधव ऐसे प्रिय कहानीकार हैं, जो परम्परा से बध्द रहते हुए भी नवचिंतन में विश्वास रखते है और कलापक्ष

को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार लेखक हा यह " मेरी प्रिय कहानियाँ " नामक संकलन अत्यन्त कलापूर्ण है।

६) छठे अध्याय में रांगेय राधव की प्रिय संकलित कहानियों की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ पाठकों के सामने प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी है। इस अध्याय में प्रत्येक कहानियों के शीर्षक के उल्लेख के साथ उनकी मौलिक विशेषताएँ की पेश की गई हैं। इससे पाठक उनकी कृतियों की सभी अंगो से देख - परख सकते हैं।

उपरोक्त सभी अध्यायों में मैंनें उपलब्ध सामग्री के आधार पर प्रामाणिकता से लघु - प्रबन्ध को पाठकों तक पहुँचाने का हेतु रखा है। लेखक के इन प्रिय रचनाओं की विविध दृष्टियों से पाठकों को जानकारी हो, यही मेरा उद्देश्य रहा है।

xxxxxxxxxxxxxxx